

# ईश्वर अल-मुजीब है - प्रार्थनाओं का उत्तर देना वाला

रेटगि:

वविरण:

श्रेणी: [लेख इस्लाम की मान्यताएं ईश्वर के बारे में](#)

द्वारा: islamtoday.net [edited by IslamReligion.com]

पर प्रकाशति: 04 Nov 2021

अंतमि बार संशोधति: 03 Jan 2022

ईश्वर का यह नाम क़ुरआन के नमिनलखिति छंद मे है:  
"उससे क़्षमा मांगो और उसी की ओर ध्यानमग्न हो जाओ। वास्तव में मेरा पालनहार समीप है और (प्रार्थनाएं) स्वीकार करने वाला है।" (क़ुरआन 11:61)



ईश्वर उन लोगों की प्रार्थनाओं का उत्तर देता है जो उससे याचना करते हैं। वह उन लोगों को राहत देता है जो उसकी शरण में आते हैं और वह उनके डर को शांत करता है। यहां तक कि ईश्वर अवशिवासियों और बहके हुए लोगों की प्रार्थनाओं का भी उत्तर देता है जब वे नरिशा में उसे पुकारते हैं:

वही है, जो जल और धरती पर तुम्हें फरिाता है। फरि जब तुम नौकाओं में होते हो और नौकाएं सवारों को लेकर अनुकूल वायु के कारण चलती है और वे उससे प्रसन्न होते हैं, तो अकस्मात् प्रचण्ड वायु का झोंका आ जाता है और प्रत्येक स्थान से उन्हें लहरें मारने लगती है और समझते हैं कि उन्हें घेर लिया गया है, तो ईश्वर की आज्ञाकारिता में उनके प्रतिईमानदार होते हुए प्रार्थना करते हैं कि: "यदत्तिने हमें बचा लिया, तो हम अवश्य तेरे कृतज्ञ बनकर रहेंगे!" फरि जब ईश्वर उन्हें बचा लेता है, तो अकस्मात् धरती पर अवैध वदिरोह करने लगते हैं। (क़ुरआन 10:22-23)

ईश्वर ने नूह (उन पर शांतहो) को उसके संकट में उत्तर दिया, जब ईश्वर पापी लोगों को बाढ़ में डूबा रहा था तब उसने नूह और उसके अनुयायियों को बड़ी नाव में बचा लिया: "नूह ने हमें पुकारा, तो हम क्या ही अच्छे प्रार्थना स्वीकार करने वाले हैं।" (क़ुरआन 37:75)

ईश्वर ने अय्यूब (उन पर शांतिहो) की प्रार्थनाओं का उत्तर दिया: "अय्यूब को याद करो, जब उसने पुकारा अपने पालनहार को कि मुझे रोग लग गया है और तू सबसे अधिक दयावान् है। तो हमने उसकी गुहार सुन ली और दूर कर दिया जो दुःख उसे था और प्रदान कर दिया उसे उसका परिवार तथा उतने ही और उनके साथ, अपनी वशिष दया से तथा उपासकों की शक्ति के लिए।" (कुरआन 21:83-84)

ईश्वर ने यूनस (उन पर शांतिहो) की प्रार्थनाओं का उत्तर दिया जब उन्होंने व्हेल (मछली) के पेट में से पुकारा: "यूनस को याद करो, जब वो चला गया क्रोधति होकर और सोचा कि हम उसे पकड़ेंगे नहीं, अन्ततः, उसने पुकारा अन्धेरे में कि 'नहीं है कोई पूज्य तेरे सिवा, तू पवतिर है, वास्तव में मैं ही दोषी हूं।' तब हमने उसकी पुकार सुन ली तथा मुक्त कर दिया शोक से और इसी प्रकार हम बचा लिया करते हैं वशिवासियों को।" (कुरआन 21:87-88)

इसी तरह, ईश्वर ने इब्राहीम, ज़कारिया, याहया, यीशु, और वास्तव में सभी पैगंबरो और दूतों की प्रार्थनाओं का उत्तर दिया (उन सभी पर शांतिहो)। उन्होंने अत्यंत वनिम्रता और ईमानदारी से अपने ईश्वर से प्रार्थना की, इसलिए ईश्वर ने अपनी असीम कृपा में उनकी रक्षा की, उनका मार्गदर्शन किया, उनको सम्मान दिलाया और उनकी प्रार्थनाओं को स्वीकार किया।

ईश्वर उन लोगों की प्रार्थनाओं का उत्तर देता है जो उनसे वनिती करते हैं और उनमें अपनी आशाएं रखते हैं। सभी प्रार्थनाएं और मनिनतें सरिफ ईश्वर से ही की जानी चाहिए।

**"और तुम्हारा पालनहार कहता है: 'मुझे पुकारो; मैं तुम्हारी प्रार्थनाओं का उत्तर दूंगा।' लेकिन जो लोग अहंकार करेंगे मुझसे प्रार्थना करने के लिए वे नश्चिती रूप से खुद को नरक में - अपमान में पाएंगे!" (कुरआन 40:60)**

ईश्वर ने हमें प्रार्थना करने का आदेश दिया है और उसने हमारी प्रार्थनाओं का जवाब देने का वादा किया है। यही कारण है कि उमर कहा करते थे: "मुझे चिती नहीं है कि मेरी प्रार्थनाओं का उत्तर दिया जाएगा, बल्कि मुझे अपनी प्रार्थनाओं की ही चिती है।"

दूसरे शब्दों में कहें तो, जब किसी व्यक्ति को ईश्वर से प्रार्थना करने का सौभाग्य मिलता है, तो यह सौभाग्य ही उसका लाभ है। और अगर प्रार्थना के जवाब की बात करें, तो यह ऐसी चीज है जिसका वादा पहले ही किया जा चुका है।

**ईश्वर ही है जो हमारे संकटों को दूर करता है। वह हमें याद दिलाता है: "ईश्वर ही उससे तथा प्रत्येक आपदा से तुम्हें बचाता है, लेकिन फरि भी तुम उसका साझी बनाते हो।" (कुरआन 6:64)**

ईश्वर से प्रार्थना करना वपित्तियों और कठनिाइयों को दूर करने और आशीर्वाद और अवसर प्राप्त करने का एक साधन है। हालांकि, इन वांछित परिणामों के लिए याचना ही एकमात्र साधन नहीं है। ऐसे अन्य साधन भी हैं जिनमें जानने की आवश्यकता है, जैसे प्राकृतिक कारण और प्रभाव संबंध।

ईश्वर अपनी बुद्धि से जानता है कि सबसे अच्छा क्या है। उन्होंने हमारी प्रार्थनाओं को हमारे जीवन को प्रभावित करने वाला प्रभाव बना दिया है, और ईश्वर ने हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर देने का वादा किया है। इसका मतलब यह है कि कभी-कभी वह हमें ठीक वही देता है जो हम मांगते हैं। और कई बार इसके बदले वह एक ऐसी वपिदा को हम पर आने से रोक लेता है जिसका आना हमारे नसीब में होता है। इसके अलावा, वह प्रार्थना का उत्तर पुनरुत्थान के दिन तक के लिए रोक लेता है, और उस दिन हमें हमारे फैसले के लिए आशीर्वाद देकर पुरस्कृत करता है, और हिसाब-किताब के समय इसको हमारे पक्ष में करता है। यह उन सभी के लिए गारंटी है जो ईमानदारी और भक्तिके साथ ईश्वर से प्रार्थना करते हैं। जहां तक इस संसार में हमारी प्रार्थनाओं के उत्तर मिलने की बात है, तो आमतौर पर ऐसा ही होता है।

जब हम पैगंबरों के जीवन के बारे में पढ़ते हैं, तो हम ऐसे कई मामले देखते हैं जहां ईश्वर ने उनकी प्रार्थनाओं का उत्तर दिया। पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की दया और कृपा उन पर बनी रहे) ने अपने कई साथियों की ओर से ईश्वर से प्रार्थना की। उन्होंने इब्न अब्बास के बारे में ईश्वर से प्रार्थना की: "हे ईश्वर! उसे धर्म के बारे में अच्छा जानकार बना।" उन्होंने प्रार्थना की कि अनस इब्न मलिकि की उम्र लंबी हो और कई बच्चे हों। उन्होंने प्रार्थना की कि उमर इब्न अल-खतताब इस्लाम को अपनाए और अपनी ताकत मुस्लिम समुदाय में जोड़ दे। उन्होंने कई जनजातियों की ओर से ईश्वर से प्रार्थना की, और उन्होंने अपने जीवन में सभी मुसलमानों के लिए ईश्वर से प्रार्थना की।

ईश्वर ने लोगों की प्रार्थनाओं का उत्तर कैसे दिया इसके बारे में हमें अतीत और वर्तमान के कई विवरण मिलते हैं। जहां भी लोग ईश्वर में विश्वास करते हैं, भले ही वे पापी हों और अपनी धार्मिक समझ में गुमराह हों, हम उनसे सुनेंगे कि कैसे ईश्वर ने उनकी प्रार्थनाओं का उत्तर दिया और उनके दुखों को दूर किया। यह एक ऐसी चीज है जिसे नकारा नहीं जा सकता, ईश्वर के अस्तित्व और उसकी दया को प्रमाणित करने वाला ये एक और प्रमाण है। यही कारण है कि जब कोई बड़ी वपिदा या वपित्त आती है, तो शायद ही कोई ऐसा होगा जो अपने संकट को दूर करने के लिए ईश्वर से प्रार्थना न करे।

## ईश्वर के इस नाम को जानने का लाभ

यह जानना कि ईश्वर प्रार्थनाओं का उत्तर देने वाला है, उन लोगों के लिए एक सांत्वना और शक्ति का स्रोत है जिनके पास ईश्वर से मांगने के सिवा कोई अन्य आशा या सहारा नहीं है। उस समय, वे

सच्चे और समर्पित हृदय से ईश्वर से प्रार्थना करते हैं, इसलिए ईश्वर जल्दी से उनके संकट और कष्टों को दूर करते हैं।

ऐसा ही अनुभव होता है उन लोगों का जो बिना किसी मदद के जेल में बंद हैं। ऐसा ही अनुभव होता है जंगल में अकेले खोए हुए व्यक्ति का। ऐसा ही अनुभव होता है उस नाविक का जिसका जहाज प्रचंड आंधी में समुद्र में फसा होता है। ऐसा ही अनुभव होता है गंभीर रूप से बीमार व्यक्ति का जिसके लिए डॉक्टरों ने उम्मीद छोड़ दी है और जो ईश्वर से प्रार्थना करके ठीक हो जाते हैं। ऐसा ही अनुभव है उत्पीड़ित का जो ताकतवर द्वारा सताया जाता है, जिनकी प्रार्थनाओं के बारे में ईश्वर कहता है: "मैं अपनी ताकत और महिमा से तुम्हें जीत दूंगा, हालांकि हो सकता है यह कुछ समय के बाद हो।" [1]

---

फुटनोट:

[1] सुनन अल-तरिम्जी, सुनन इब्न माजाह

इस लेख का वेब पता:

<https://www.islamreligion.com/hi/articles/10872>

कॉपीराइट © 2006-2020 सभी अधिकार सुरक्षित हैं। © 2006 - 2023 IslamReligion.com. सभी अधिकार सुरक्षित हैं।